सांध्य दैनिक 4PM

लोग अपने कर्तव्यों को भूल जाते हैं पर अधिकारों को याद रखते हैं।
-इंदिरा गांधी

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 9 ● अंक: 169 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार, 26 जुलाई, 2023

ड्रॉ मैच से टीम इंडिया की रैंकिंग... 7 | 'इंडिया' से जुड़ेगा भारत, तो बदलेगी... 3 | विभाजनकारियों की उल्टी गिनती... 2

मोदी सरकार को झटका, विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव को मंजूरी

» लोकसभा अध्यक्ष ने गोगोई की मांग मानी

» मानसून सत्र के पांचवे दिन भी संसद में हंगामा

» मणिपुर पर पीएम के बयान पर अड़ा विपक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मोदी सरकार को करारा झटका लगा है। विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव को लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मंजूदी दे दी है। आज संसद के मानसून सत्र का पांचवां दिन है। बीते चार दिनों से सदन में मणिपुर मुद्दे पर बहस छिड़ी हुई है। इसी बीच, विपक्षी दलों के द्वारा आज (बुधवार) को लोकसभा में केंद्र सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया है।

लोकसभा स्पीकर ने अविश्वास प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। अविश्वास प्रस्ताव को लेकर कांग्रेस सहित सभी विपक्षी दलों ने सहमति जताई है। इसे लेकर कांग्रेस ने अपने सांसदों को व्हिप भी जारी किया है। बता दें कि विपक्ष की मांग है कि मणिपुर मुद्दें पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी खुद बयान दें, जबकि सरकार का कहना है कि वह मणिपुर पर चर्चा के लिए तैयार है, लेकिन विपक्षी दल एक नियम के तहत चर्चा के लिए दबाव डाल रहे हैं।

माइक बंद कर मेरा अपमान किया गया : खरगे

राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि कल जब मुझे बात करने की परमिशन मिली तो सोचा था कि मौका मिलेगा बात करने के लिए। मैं अपने मुद्दों को सदन के सामने रख रहा था, मेरा माइक बंद करना मेरे विशेषाधिकार का उल्लंघन है। मेरा अपमान हुआ है। मेरे आत्मसम्मान को चैलेंज किया है। वहीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा, मैं हैरान हूं कि सदन के एक सदस्य ने सदन के बाकी सदस्यों को धोखेबाज कहा! यह क्या हो रहा है! मैं इसकी निंदा करती हूं।

मणिपुर मुद्दे पर चर्चा के लिए नोटिस

कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने लोकसभा में स्थगन प्रस्ताव नोटिस देकर मणिपुर की स्थिति पर चर्चा कराने की मांग की है। डीएमके सांसद तिरुचि शिवा, राजद सांसद मनोज कुमार झा, कांग्रेस सांसद राजीव शुक्ला और रंजीत रंजन और आप सांसद राघा चड्ढा ने नियम 267 के तहत राज्यसभा में नोटिस दिया है और मणिपुर की स्थिति पर चर्चा की मांग की है। राजद सांसद मनोज झा ने कहा कि अविश्वास प्रस्ताव के संबंध में हम अच्छी तरह से जानते हैं कि संख्याएं हमारे पक्ष में नहीं हैं, लेकिन यह संख्या को लेकर नहीं है, अविश्वास प्रस्ताव के बाद पीएम को संसद में बोलना होगा। इसलिए, लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव लाया जा रहा है।पीएम मोदी के बयान पर संजय सिंह की टिप्पणी आई सामने राज्यसभा से निलंबित सांसद संजय सिंह ने कहा कि पीएम मोदी ने मणिपुर हिंसा से ध्यान भटकाने के लिए (विपक्षी गठबंधन) का अपमान किया। हम अपना अपमान बर्दाश्त कर सकते हैं, लेकिन भारत का नहीं।लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि हम केंद्र सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव ला रहे हैं। कांग्रेस आज लोकसभा में नरेन्द्र मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाएगी। जानकारी के मुताबिक, लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता गौरव गोगोई मणिपुर मुद्दे पर मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाए।

सांसदों ने कारगिल के योद्धाओं को दी श्रद्धांजलि

राज्यसभा और लोकसभा की कार्यवाही शुरू हो गई है। दोनों सदनों के सदस्यों ने कारगिल विजय दिवस के मौके पर 1999 के कारगिल युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले सैनिकों को श्रद्धांजलि दी।

सांसद संजय सिंह से मिलीं सोनिया गांधी

कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने आज संसद पहुंचते ही आप सांसद संजय सिंह से मुलाकात की। संजय सिंह और कांग्रेस सांसद रजनी पाटिल को संसद के शेष मानसून सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया है। वहीं विपक्षी सांसदों की नारेबाजी के बीच लोकसभा स्थगित कर दी गई। सांसद संजय सिंह को राज्यसभा के शेष सत्र के लिए निलंबित करने पर भाजपा सांसद राम कृपाल यादव ने कहा कि बिना वजह हंगामा करना संजय सिंह का स्वभाव है। उन्होंने (संजय सिंह) राज्यसभा सभापति के साथ अभद्र व्यवहार किया, जिसके बाद उन्हें सदन से निलंबित कर दिया गया।

सरकार तैयार : मेघवाल

केंद्रीय राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि अविश्वास प्रस्ताव आने दीजिए, सरकार हर स्थिति के लिए तैयार है। हम मणिपुर पर चर्चा चाहते हैं। उन्होंने कहा कि सत्र शुरू होने से पहले वे चाहते थे चर्चा। जब हम सहमत हुए, तो उन्होंने नियमों का मुद्दा उठाया। जब हम नियमों पर सहमत हुए, तो वे नया मुद्दा लेकर आए कि पीएम आएं और चर्चा शुरू करें। मुझे लगता है कि ये सभी बहाने हैं।

ज्ञानवापी परिसर मामले की हाईकोर्ट में सुनवाई जारी

» अदालत ने पूछा- एएसआई कैसे करेगी सर्वे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

प्रयागराज। वाराणसी जिला न्यायालय के द्वारा काशी विश्वनाथ ज्ञानवापी परिसर के सर्वे के खिलाफ हाईकोर्ट में दाखिल याचिका पर सुनवाई शुरू हो गई है। मुस्लिम पक्ष के अधिवक्ता एसएफए नकवी अपना शक रख रहे हैं। अंजुमन इंतजामिया मसाजिद ने जिला जज वाराणसी द्वारा वैज्ञानिक सर्वे की अनुमति देने वाले आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी है।

मुस्लिम पक्ष के वकील नकवी बहस कर रहे हैं। मुस्लिम पक्ष के वकील और राज्य सरकार के महाधिवक्ता भी कोर्ट में मौजूद हैं। वैज्ञानिक सर्वे पर सुप्रीम कोर्ट ने आज शाम पांच बजे तक रोक लगाई है। हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार के सॉलिसिटर जनरल (एसजी) से पूछा कि एएसआई ज्ञानवापी में क्या करेगी। कोर्ट ने एसजी शशि प्रकाश सिंह से पूछा सवाल। कोर्ट ने पूछा किस तरह एएसआई सर्वेक्षण करेगी। खुदाई करेंगे या नहीं। हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने कहा 1993 तक होती थी पूजा और आरती। औरंगजेब ने विध्वंस कराया था मंदिर।

सुप्रीम कोर्ट के दरबार में पहुंची केंद्र सरकार

» ईडी निदेशक का कार्यकाल बढ़ाने की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्र ने प्रवर्तन निदेशालय के निदेशक संजय कुमार मिश्रा का कार्यकाल बढ़ाने की मांग को लेकर एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है। इस मामले में 27 जुलाई को सुनवाई होगी। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के मुताबिक, ईडी निदेशक के तौर पर एसके मिश्रा का कार्यकाल 31 जुलाई को खत्म हो जाएगा। गौरतलब है, इससे पहले सुप्रीम कोर्ट से केंद्र सरकार को करारा झटका लगा था। शीर्ष कोर्ट ने ईडी निदेशक संजय कुमार मिश्रा के कार्यकाल विस्तार को अवैध ठहराया था। शीर्ष अदालत ने उन्हें अपने लंबित काम निपटाने के लिए 31 जुलाई 2023 तक का समय दिया। साथ ही न्यायमूर्ति बीआर गवई, न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संजय करोल की पीठ ने ईडी निदेशक के कार्यकाल को अधिकतम पांच साल तक बढ़ाने के लिए केंद्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम और दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना अधिनियम में संशोधन को सही ठहराया।

2018 में संजय कुमार मिश्रा हुए थे नियुक्त

गौरतलब है कि संजय कुमार मिश्रा को नवंबर 2018 में प्रवर्तन निदेशालय के पूर्णकालिक प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया था। संजय मिश्रा 1984-बैच के भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) आयकर कैडर के अधिकारी हैं। उन्हें पहले जांच एजेंसी में प्रमुख विशेष निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया था। ईडी में नियुक्ति से पहले संजय मिश्रा दिल्ली में आयकर विभाग के मुख्य आयुक्त के रूप में कार्यरत थे। केंद्र सरकार ने सबसे पहले 2020 में उनको एक साल का सेवा विस्तार दिया था। तब उन्हें 18 नवंबर, 2021 तक एक साल के लिए उनका कार्यकाल बढ़ाया गया था। फिर 2021 में कार्यकाल समाप्त होने से एक दिन पहले ही उन्हें दोबारा सेवा विस्तार दिया गया। ये दूसरी बार था। वहीं, 17 नवंबर 2022 को संजय कुमार मिश्रा का दूसरा सेवा विस्तार खत्म होने से पहले ही कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने एक वर्ष (18 नवंबर 2022 से 18 नवंबर 2023 तक) के लिए तीसरे सेवा विस्तार को मंजूरी दे दी थी।

विभाजनकारियों की उल्टी गिनती शुरू : अखिलेश

» भाजपा पर बोला हमला- चोंगा धारण कर लेने से मूल-स्वरूप नहीं छुपता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि जो लोग आजादी के आंदोलन में स्वतंत्रता-सेनानियों की मुखबरी कर रहे थे, वो अब थोथे प्रवचन कर रहे हैं। अपने नाम में उपाधि लगा लेने से या चोंगा धारण कर लेने से मूल-स्वरूप नहीं छुपता है। उन्होंने कहा कि राजनीति को बंटवारे के हथियार के रूप में इस्तेमाल करने वाले विभाजनकारी अब अपने दिन गिनें।

उधर लोक सभा चुनाव जल्द होन के सवाल पर सपा नेता उदयवीर सिंह कहते हैं कि इस साल के अंत में चार राज्यों के चुनाव में भाजपा को अपनी स्थिति ठीक नहीं लग रही है। वहां इंडिया के घटक दल काफी मजबूत हैं। इसलिए भाजपा चार राज्यों को हारकर लोकसभा चुनाव में नहीं जाना चाहती और इससे डरकर राज्यों के साथ ही लोकसभा चुनाव कराने की योजना बना रही है।

फूलन देवी को किया याद

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि अत्याचार व शोषण के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करने वाली सामाजिक न्याय की योद्धा और पूर्व सांसद स्वर्गीय फूलन देवी को सदैव श्रद्धापूर्वक याद किया जाएगा। अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव में जन्मी वीरांगना फूलन देवी ने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध बगावत की और राजनेता बनी। फूलन देवी के बलिदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है। उधर, समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के दारुलशफा स्थित कैंप कार्यालय में वीरांगना फूलन देवी के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी गई। प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजपाल कश्यप ने कहा कि फूलन देवी ने जुल्म के खिलाफ लड़ते हुए राजनीति में भी एक मुकाम हासिल किया। वह गरीबों की मसीहा थीं।

गठबंधन की मजबूर सरकार से ही होगा भला : मायावती

» बसपा ने की समीक्षा बैठक

» कर्मठ व ईमानदार उम्मीदवारों का ही हो चयन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मध्य प्रदेश में होने जा रहे विधानसभा चुनाव को लेकर बसपा सुप्रीमो मायावती ने कहा कि चुनाव के बाद बैलेंस ऑफ पावर बनने पर ही सरकार में शामिल होने का विचार किया जा सकता है। यूपी की पूर्व सीएम मायावती ने कहा कि इन राज्यों में धार्मिक अल्पसंख्यकों व मुस्लिम समाज का भला तभी हो सकता है जब मजबूत व अहंकारी सरकार नहीं बल्कि गठबंधन की मजबूर सरकार होगी। इस समाज के लोगों पर अत्याचार की खबरें लगातार आती हैं। यह दुखद है।

इसका समाधान तभी होगा जब सरकार में उनके हितैषी प्रतिनिधि होंगे। मायावती ने सरकार ने बाढ़ पीड़ितों की भी मदद करने की अपील की। वह दिल्ली में मध्य प्रदेश के पार्टी पदाधिकारियों की बैठक ले रही थीं। मायावती इन दिनों लगातार उन राज्यों के पार्टी पदाधिकारियों की बैठक लें रही हैं जहां विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। छत्तीसगढ़, तेलंगाना और राजस्थान के बाद उन्होंने मंगलवार को मध्य प्रदेश के पदाधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने कहा कि कर्मठ व ईमानदार उम्मीदवारों का ही चयन किया जाए। कई राज्यों में शक्ति का संतुलन बनने के बावजूद जातिवादी तत्वों द्वारा साम, दाम, दंड, भेद के हथकंडे अपनाए जाते हैं। बसपा विधायकों को तोड़ लिया जाता है। इससे जनता के साथ विश्वासघात कर घोर स्वार्थी लोग सत्ता पर काबिज हो जाते हैं। इसलिए आगे इन विधानसभा चुनाव में बैलेंस ऑफ पावर बनने पर लोगों की चाहत के हिसाब से सरकार में शामिल होने पर विचार किया जाएगा।

संसद से सड़क तक उठाएंगे जनता के मुद्दे : खाबरी

» हर जिले में दो बार धरना करेगी कांग्रेस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस कमेटी जनहित के मुद्दों को लेकर हर माह हर जिले में कम से कम दो धरना प्रदर्शन करेगी। इसके लिए सभी जिलाध्यक्षों को निर्देशित किया गया है। प्रदेश अध्यक्ष पूर्व सांसद बृजलाल खाबरी ने बताया कि सभी जिलाध्यक्षों को निरंतर सक्रिय रहने के निर्देश दिए गए हैं। बिजली, पानी, सिंचाई, जल निकासी सहित हर मुद्दे को कांग्रेस उठाएगी। किसानों के मुद्दों को अनिवार्य रूप से उठाने के लिए कहा गया है। उन्होंने कहा कि विपक्ष के अन्य दल जनहित के मुद्दों पर चुप्पी साधे हुए हैं। पार्टी के पास विधायक संख्या सिर्फ दो है। ऐसे में सदन के साथ ही सड़क पर जनता के मुद्दों को निरंतर उठाया जा रहा है।

लोकसभा चुनाव की तैयारी में जुटी कांग्रेस कमेटी अपना जनाधार बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। संविधान बचाओ, आरक्षण बचाओ सम्मेलन के साथ ही प्रदेश स्तर पर बैठकों का दौर जारी है। पार्टी के अल्पसंख्यक विभाग, युवक कांग्रेस, भारतीय छात्र संगठन आदि की ओर से विभिन्न अभियान चलाए जा रहे हैं। ऐसे में अब जिला स्तर पर संगठन को मजबूत करने और जनता का विश्वास जीतने के लिए भी रणनीति बनाई गई है।

अल्पसंख्यकों के अधिकार पर खतरा : मदनी

» यूसीसी के खिलाफ समर्थन जुटाने में जुटे जमीयत चीफ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली/सहारनपुर। यूनिफॉर्म सिविल कोड यानी यूसीसी के खिलाफ समर्थन जुटाने के लिए जमीयत उलेमे-ए-हिंद प्रमुख मौलाना महमूद मदनी ने बैठक की है। उन्होंने दावा किया है कि समान नागरिक संहिता के कार्यान्वयन से धार्मिक विविधता, अल्पसंख्यक अधिकार और न्याय के सिद्धांत खतरे में पड़ सकते हैं। यूसीसी के खिलाफ समर्थन जुटाने के लिए जमीयत उलेमा-ए-हिंद ने सांसदों, और मुस्लिम बुद्धिजीवियों के साथ बैठक की।

यूसीसी पर विचार-विमर्श करने के लिए सोमवार शाम को एक सम्मेलन हुआ। जिसमें कांग्रेस से कार्ति चिदंबरम, मुहम्मद जावेद और इमरान प्रतापगढ़ी, नेशनल कॉन्फ्रेंस से हसनैन मसूदी, एलजेपी से मेहबूब अली कैसर, बीएसपी से कुंवर दानिश अली, आईयूएमएल से ईटी मुहम्मद बशीर और अब्दुस्समद समदानी सहित कई सांसद मौजूद रहे। जमीयत ने बयान जारी करते हुए कहा कि बैठक यूसीसी से संबंधित चिंताओं, विशेष रूप से मुस्लिम अल्पसंख्यक और आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक और धार्मिक अधिकारों पर इसके संभावित प्रभाव को संबोधित करने पर केंद्रित थी।

मणिपुर में हो रहे अत्याचार को छुपाना चाहती है भाजपा : राघव

सांसद बोले- लगे राष्ट्रपति शासन

नई दिल्ली। मणिपुर हिंसा को लेकर आम आदमी पार्टी से राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने भारतीय जनता पार्टी पर जुबानी हमला बोला है। मीडिया से बातचीत के दौरान राघव चड्ढा ने कहा कि भाजपा मणिपुर में हो रहे अत्याचार को छुपाना चाहती है। राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर केंद्र को वहां शांति बहाल करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हम मणिपुर पर बोलने वाले विपक्षी सांसदों के निलंबन का विरोध करते हैं। अब इंडिया शब्द से नफरत करने लगे हैं। लेकिन भारत सरकार, स्टार्टअप-इंडिया, डिजिटल इंडिया और अन्य में भी इंडिया है।

24 में भाजपा आई तो लोकतंत्र खत्म : उद्धव

» जनता ही अब बचा सकती है देश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र के पूर्व सीएम उद्धव ठाकरे ने कहा है कि 2024 में अगर भाजपा सरकार आ गई तो लोकतंत्र देश में खत्म हो जाएगा। ठाकरे ने कहा कि 2024 देश के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ होगा। अगर यह (बीजेपी) सरकार दोबारा सत्ता में आती है तो मुझे नहीं लगता कि यहां लोकतंत्र बचेगा।

महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने कहा, यह आम लोग ही हैं जो लोकतंत्र को बचाएंगे, राज्यसभा सदस्य और सामना के कार्यकारी संपादक संजय राउत के साथ दो-भाग के इंटरव्यू में, उन्होंने कई विषयों और महाराष्ट्र और भारत की वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर बात की। वहीं एकनाथ शिंदे पर निशाना साधते हुए उद्धव ठाकरे ने कहा कि फिलहाल राज्य में दो होर्डिंग देखने को मिलते हैं। कुछ भागों में अजीत पवार के भावी मुख्यमंत्री होने के होर्डिंग्स दिखाए देते हैं तो विदर्भ के कुछ हिस्सों में देवेंद्र फडणवीस के भावी मुख्यमंत्री के रूप में होर्डिंग लगे हैं। और फिलहाल, जो मुख्यमंत्री अस्तित्व में हैं वह एक मजाक हैं। ठाकरे ने कहा कि कई वर्षों बाद यह पता चला है कि इस देश में 'एनडीए' नामक कोई अमीबा जीवित है। दूसरी तरफ हमारे जैसे देशभक्त राजनीतिज्ञ हैं जिन्होंने 'इंडिया' नामक एक गठबंधन बनाया है। उसी दिन हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने 36 दलों को दावत दी। सच कहें तो उन्हें उन 36 दलों की कोई आवश्यकता ही नहीं है। कुछ पार्टियों के पास तो एक भी सांसद नहीं हैं। असली शिवसेना 'एनडीए' में नहीं है।' सारे गद्दार वहां चले गए हैं। उनके 'एनडीए' में अब ईडी, इनकम टैक्स और सीबीआई ये तीन दल ही मजबूत हैं।' ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स भी अब एनडीए में शामिल हो गए हैं और यही उनकी शक्ति है!' उद्धव ठाकरे ने कहा, साल वर्ष 2024 हमारे देश के जीवन को नया मो? देगा। ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य भी अंततः अस्त हुआ ही था। हर किसी का अंत होता ही है। यह प्रकृति का नियम है।'

बीजेपी कैसे ले सकती है राम मंदिर का श्रेय

उद्धव ठाकरे ने महा विकास अघाड़ी सरकार को गिराने के बारे में कहा कि सरकार बही नहीं थी, बांध केकड़े ने तोड़ दिया था एक सवाल पर ठाकरे ने कहा कि दिल्ली के सामने झुकना हमारी संस्कृति नहीं है। उन्होंने कहा, उद्धव ठाकरे सिर्फ एक व्यक्ति नहीं हैं, उद्धव ठाकरे का मतलब बाला साहेब के विचार हैं। उन्होंने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा, जिन्होंने बाबरी (मस्जिद विध्वंस) की जिम्मेदारी नहीं ली, वे राम मंदिर का श्रेय कैसे ले सकते हैं।

'इंडिया' से जुड़ेगा भारत, तो बदलेगी सियासत

कांग्रेस की उम्मीदें जगीं, अन्य दल भी उत्साहित

- विपक्ष के गठबंधन नाम को लोगों ने सराहा
- भाजपा-राजग की नींद उड़ी
- 77 में पहली बार बनी थी गंठबंधन की सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। विपक्ष के इंडिया गठबंधन नाम के बाद से पूरे देश के सियासत का माहौल बदल गया है। राजनीतिक गलियारों में अब चर्चा होने लगी है कि इस बार भाजपा के लिए 24 की राह आसान नहीं होगी। जानकारों की माने तो 18 जुलाई को बेंगलुरू में 26 दलों की बैठक के बाद से कांग्रेस के ग्राफ में भी अभूतपूर्व उछाल आया है लोगों को ऐसा लगने लगा है कि कांग्रेस की अगुवाई में अन्य दलों की सरकार बनाई जा सकती है जो मोदी सरकार की कमियों से देश की जनता को निजात दिला सकती है। वहीं चर्चा यह भी है किसी एक दल को सत्ता नहीं मिलेगी और फिर गठबंधन की सरकार बनेगी। इंडिया को लेकर लोगों में भी उत्साह है। अब देखना होगा आगामी चुनाव में इंडिया को भारत की सत्ता मिलती है या भाजपा नीत राजग की सरकार बरकार रहती है।

कांग्रेस समेत 26 विपक्षी दलों के गठबंधन इंडिया के नाम की पिछले दिनों काफी चर्चा हुई। 18 जुलाई को बेंगलुरु में विपक्षी दलों ने मंच पर आकर 2024 के लिए गठबंधन के लिए इंडिया नाम की घोषणा की, जिसके बाद बीजेपी हमलावर हो गई। विपक्ष का कहना है कि इंडिया का मतलब इंडियन नेशनल डेवलपमेंट इनक्लूसिव एलायंस है। बीजेपी नेता और असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने अपने ट्विटर हैंडल के बायो से इंडिया शब्द हटाकर भारत लिख दिया और कहा कि हमें खुद को औपनिवेशक विरासत से मुक्त करने का प्रयास करना चाहिए। बीजेपी के हमले पर विपक्षी दलों ने भी पलटवार किया। इस बीच एक सर्वे किया गया और लोगों से उनकी राय जानने की कोशिश की गई कि विपक्षी गठबंधन का नाम इंडिया रखना सही है या गलत।

गठबंधन शब्द लैटिन भाषा के कोलिटियो से मिलकर बना है। इसका मतलब होता है- एक साथ बढ़ना। केंद्र में गठबंधन सरकार के इतिहास की बात करें तो इसकी शुरुआत 1977 में जनता पार्टी की सरकार से हुई, जिसके प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई थे। जनता पार्टी में कुल 13 दल शामिल थे। यह पहली गैर-कांग्रेसी सरकार थी। हालांकि, अटल बिहारी वाजपेयी के समर्थन लेने के चलते जनता पार्टी की सरकार गिर गई और जनता दल (सेक्युलर) के चौधरी चरण सिंह देश के प्रधानमंत्री बने। हालांकि, वे 1980 तक ही पद पर बने रह सके। केंद्र में पहली गठबंधन सरकार जनता पार्टी के नेतृत्व में बनी थी, जिसमें मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री बनाया गया था। इसके बाद गठबंधन सरकारें बनने का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह आज भी जारी है। देश का सियासी मिजाज इस समय बदला हुआ है। एक तरफ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तो दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी अपने सहयोगियों का कुनबा बढ़ाने में जुटी हुई है। कांग्रेस ने जहां 26 दलों के अपने साथ होने की बात कही है, वहीं भाजपा ने 38 दलों के समर्थन का दावा किया है। चौधरी चरण सिंह की सरकार अल्पमत में थी। उसे कांग्रेस का समर्थन मिला हुआ था, लेकिन जब लोकसभा में विश्वास मत हासिल करने की बारी आई तो कांग्रेस ने अपना समर्थन वापस ले लिया, जिससे सरकार गिर गई। साल 1989 में कांग्रेस की हार के बाद जनता दल और अन्य क्षेत्रीय दलों से मिलकर बनी राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार अस्तित्व में आई और विश्वनाथ प्रताप सिंह यानी वीपी सिंह प्रधानमंत्री बने। इस दौरान जो सबसे हैरान कर देने वाली बात सामने आई, वह थी धुर-विरोधी भाजपा और वाम दलों का साथ आना। दरअसल, 1987 में रक्षा मंत्री पद से हटाने के बाद वीपी सिंह ने जन मोर्चा का गठन किया था। यह मोर्चा लगातार राजीव गांधी की सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार को लेकर हमला बोल रहा था। 1989 के लोकसभा चुनाव से पहले वीपी सिंह ने जन मोर्चा, लोकदल, जनता पार्टी और कांग्रेस (एस) को मिलाकर जनता पार्टी बनाई। इसके बाद उन्होंने वाम और दक्षिण पंथी कुछ दलों को साथ लेकर ग्रीय मोर्चा बनाया। 1989 में राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार बनी और वीपी सिंह प्रधानमंत्री बने। हालांकि, मंडल कमीशन की सिफारिश लागू होने पर भाजपा ने समर्थन वापस ले लिया, जिससे सरकार गिर गई। साल 1990- 921 में जनता दल (सोशलिस्ट) या भारतीय समाज पार्टी की सरकार बनी और चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बने, लेकिन यह सरकार महज कुछ ही महीने (10 नवंबर 1990 से लेकर 21 जून 1991) तक रही।

संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन 2004 में अस्तित्व में आया

2004 के लोकसभा चुनाव के बाद संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) की सरकार बनी और डॉक्टर मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने। यूपीए की सरकार को सपा और वाम दलों का भी बाहर से समर्थन प्राप्त था। इस चुनाव में यूपीए को 222 सीटें मिली थीं। बाद में, 2008 में वाम दलों ने यूपीए सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया, तब सपा ने सरकार को गिरने से बचाया था। इसके बाद 2009 में हुए लोकसभा में फिर से यूपीए की सरकार बनी और मनमोहन सिंह लगातार दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। यूपीए को इस चुनाव में 262 सीटें मिली थीं। इसके बाद 2014 में फिर से राजग के नेतृत्व वाले गठबंधन की सरकार आई और नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने। इस गठबंधन की अभी तक सरकार चल रही है।

लोंगों को पंसद आ रहा विपक्ष के गठबंधन का नाम

सर्वे में देखा गया कि ज्यादातर लोगों ने कहा कि विपक्षी गठबंधन का नाम इंडिया रखा जाना ठीक है। आंकड़ों के मुताबिक, 49 प्रतिशत ने कहा कि गठबंधन का नाम इंडिया रखा जाना सही है, जबकि 39 फीसदी लोगों का कहना है कि इंडिया नाम रखने का फैसला ठीक नहीं है। इसके अलावा, 12 प्रतिशत लोग कंफ्यूज नजर आए और उन्होंने पता नहीं में जवाब दिया।

गठबंधन सरकार पर गिरने का रहता है खतरा

गठबंधन सरकार के कभी भी गिरने की संभावना बनी रहती है। अक्सर ऐसा होता है कि किसी मुद्दे पर सरकार में शामिल दलों में बात नहीं बन पाती, जिससे दल अपना समर्थन वापस ले लेते हैं। अटल बिहारी वाजपेयी, मोरारजी देसाई, चंद्रेशखर और वीपी सिंह की सरकार इसका मुख्य उदाहरण है। गठबंधन की सरकार में विभिन्न मंत्रालयों में तालमेल की कमी होती है, जिससे लोगों के कल्याण के लिए जरूरी योजनाएं नहीं बन पातीं। अलग-अलग दलों के मंत्री होने के चलते शासन चलाने में गतिरोध पैदा होता है गठबंधन सरकार में टकराव भी देखने को मिलता है, जिससे कानूनों को लागू करने में भी परेशानी होती है गठबंधन में स्थायित्व नहीं होता। इसका प्रमाण हमें राज्यों में देखने को मिलता है। बिहार मे जहां नीतीश कुमार एनडीए का साथ छोड़कर महागठबंधन का हिस्सा बन गए हैं तो वहीं सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी भी सपा का साथ छोड़कर अब फिर से वापस एनडीए में आ गई है।

बहुदलीय गठजोड़ सरकारें नहीं कर पाती मनमानी

जब चुनाव में किसी दल को बहुमत नहीं मिलता, तब गठबंधन की सरकार बनती है। इसकी वजह भारत में बहुदलीय व्यवस्था का होना है। कई दल होने की वजह से किसी एक पार्टी को बहुमत मिलना मुश्किल होता है। गठबंधन की राजनीति का सबसे बड़ा फायदा यह है कि सरकार निरंकुश नहीं हो पाती। उसे न्यूनतम साझा कार्यक्रम के तहत काम करना होता है। इसके साथ ही, उसे गठबंधन में शामिल अन्य दलों को भी ध्यान में रखना होता है। गठबंधन की राजनीति में सशक्त विपक्ष का निर्माण भी होता है। ताजा उदाहरण कांग्रेस के नेतृत्व में हुई विपक्षी नेताओं की बैठक है, जिसमें 26 दल शामिल हुए हैं। इसकी वजह यह है कि एक अकेला दल सत्ता पक्ष से नहीं लड़ सकता। उसे अन्य सहयोगियों की जरूरत पड़ती ही है। अन्य दलों का भी मिलता है सहयोग- गठबंधन की सरकार में कई दल शामिल होते हैं। इससे अन्य दलों के नेताओं की प्रतिभा का देश को लाभ मिलता है।

98 में बना राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन

1998 के आम चुनाव से पहले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन बना, जिसमें 13 दल शामिल थे। चुनाव बाद एनडीए की सरकार बनी और अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने, लेकिन एआइडीएमके के समर्थन वापसी से 13 दिन में ही यह सरकार गिर गई। इसके बाद 1999 में चुनाव हुआ, जिसमें एनडीए को पूर्ण बहुमत मिला और फिर अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री बने।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

पूर्वोत्तर को अशांत होने से बचाएं

2023 पूर्वोत्तर काले दिनों के रूप में याद किया जाएगा। इस साल वहां के तीन महत्वपूर्ण राज्य मणिपर, मिजोरम व मेघालय अशांत रहे। बहुत उठा-पटक देख चुके इन राज्यों में बिगत सालों में हालात काबू में थे परंतु जिस तरह से 2023 के अप्रैल से मणिपुर में माहौल बिगड़ा है वह आजतक पटरी पर नहीं आ पा रहा अब तो उसके पड़ोसी राज्यों में विद्रोह होने लगा है। सबसे बड़ी चिंता की बात ये है कि सैकड़ों लोगों की जान जाने व करोड़ों की संपत्ति जलने के बाद भी सरकारें चुप हैं । बस सत्ताधीशों का रटा-रटाया एक ही जुमला है हम सख्त कार्रवाई करेंगे पर कार्रवाई तो नहीं हो पाती है वारदात जरूर हो जाती है। सबसे बड़ी विंडबना ये है कि ये घटनाए रूकने की बजाए अन्य जगहों पर फैल रही है जो राज्य के लिए ठीक नहीं है। मणिपुर में पिछले करीब तीन महीने से जारी दंगों पर रोक लगना तो दूर, अब पड़ोसी राज्य मिजोरम में भी इसका असर दिखने लगा है। मणिपुर में दो महिलाओं को वस्त्रहीन करके उनकी परेड कराए जाने से जुड़ा एक विडियो वायरल होने के बाद मिजोरम में भी तनाव बढ़ने की खबर है।

इसी संदर्भ में शनिवार को पूर्व उग्रवादियों के एक ग्रुप पीएएमआरए ने मिजोरम में रह रहे मणिपुर के मैतेई समुदाय के लोगों से कहा कि वे जल्द से जल्द मिजोरम छोड़ दें। उसके बाद इन लोगों में घबराहट फैल गई और कई लोग विमान से या सड़क मार्ग से वहां से निकलने लगे। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं बेहद खतरनाक है। इसमें दो राय नहीं कि मणिपुर में जो कुछ हुआ और हो रहा है, उसकी जितनी निंदा की जाए वह कम है। वहां हालात काबू करने की कोशिशें की जा रही हैं। हालांकि उन कोशिशों को किस तरह आगे बढ़ाया जाए और किन उपायों से उन्हें कारगर बनाया जाए इस पर अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। सबसे बड़ी बात यह कि संसद में उस पर कोई चर्चा तक नहीं हो पा रही। केंद्र और विपक्ष को अविलंब पहलकदमी लेकर इस गतिरोध को जल्द से जल्द दूर करने की जरूरत है ताकि मणिपुर की घटनाओं पर राजनीतिक आम सहमति बनती दिखे और वहां हालात संभालने के प्रयासों को और तेज किया जा सके। उधर मेघालय के पश्चिमी तुरा शहर में भी बवाल हो गया है। उग्र लोगों ने सीएम कार्यालय पर हमले किये। बता दें कि अचिक कॉन्सियस हॉलिस्टिकली इंटीग्रेटेड क्रिमा और गारो हिल्स स्टेट मूवमेंट कमेटी के नेता तुरा को राज्य की शीतकालीन राजधानी बनाने की मांग कर रहे हैं। ऐसे में मुख्यमंत्री कोनराड के संगमा प्रदर्शनकारियों से मुलाकात करने पहुंचे थे। जब सीएम कार्यालय में मुख्यमंत्री प्रदर्शनकारियों से बातचीत कर रहे थे, इसी दौरान लोगों की भीड़ ने कार्यालय पर हमला कर दिया था।

बस सत्ताधीशों का रटा-रटाया एक ही जुमला है हम सख्त कार्रवाई करेंगे पर कार्रवाई तो नहीं हो पाती है वारदात जरूर हो जाती है। सबसे बड़ी विंडबना ये है कि ये घटनाए रूकने की बजाए अन्य जगहों पर फैल रही है जो राज्य के लिए ठीक नहीं है। मणिपुर में पिछले करीब तीन महीने से जारी दंगों पर रोक लगना तो दूर, अब पड़ोसी राज्य मिजोरम में भी इसका असर दिखने लगा है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

कारगिल के शहीदों का ऋणी है देश

प्रेम कुमार धूमल

अंग्रेजी में कहावत है कि सतत सतर्कता ही स्वतंत्रता का मूल्य है अर्थात स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सदैव चौकन्ना रहना पड़ता है। यही कारण है कि हमारी सेनायें, हमारी स्वतंत्रता, हमारे जानमाल और हमारे राष्ट्र की एक-एक इंच के लिये चौबीसों घंटे सजग, सचेत और सतर्क रहती हैं। स्वतंत्रता मिलने के तुरन्त बाद जब पाकिस्तान ने कबायलियों के भेष में कश्मीर में अपनी सेना की घुसपैठ करवाई थी तब भी भारत के वीर सैनिकों ने देश की रक्षा की। पाकिस्तानियों के दांत खट्टे करते हुए पूरे का पूरा कश्मीर अपने कब्जे में लेने के लिये हमारे वीर सैनिक आगे बड़े रहे थे तभी तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने युद्धविराम की घोषणा कर दी। इस तरह कश्मीर की समस्या देश के लिए अनवरत समस्या बन गई।

वर्ष 1962 में भी वीर सैनिकों ने बिना आधुनिक हथियारों के भी चीन की सेना का जबरदस्त मुकाबला किया था। लेकिन राजनीतिक नेतृत्व ने फिर हथियार डाल दिये। वर्ष 1965 में भी वीर सैनिकों ने जबरदस्त विजय प्राप्त की। युद्ध क्षेत्र में वीर सैनिकों ने अपनी वीरता और कुर्बानी से जो कुछ जीता था उसे ताशकन्द समझौते के अन्तर्गत बातचीत के टेबल पर खो दिया गया, केवल जीता हुआ क्षेत्र ही नहीं खोया हमने अपने प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी को भी खो दिया। वर्ष 1971 के युद्ध के परिणामस्वरूप वीर सैनिकों ने अपनी वीरता और बलिदान से पाकिस्तान के दो टुकड़े कर दिये, बंगला देश एक नया राष्ट्र बन गया। हमारे सैनिकों ने इकानवे हजार से ज्यादा पाकिस्तानी सैनिकों को युद्धबन्दी बना लिया। राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखाई होती तो पूरे का पूरा कश्मीर हमारा हो सकता था परन्तु जो सैनिकों ने जीता वो शिमला समझौते के अंतर्गत तत्कालीन नेतृत्व ने बातचीत के टेबल पर खो दिया। इस सारे इतिहास को देखते हुए हम कह सकते हैं कि अटल बिहारी वाजपेयी जी के रूप में पहली बार देश को एक सशक्त नेतृत्व मिला जिसने जब आवश्यकता थी तो परमाणु बम धमाके भी किये। वहीं वीर सैनिकों की भावना का सम्मान करते हुए अंतर्राष्ट्रीय दबाव के बावजूद युद्धविराम की घोषणा तब तक नहीं की जब तक कारगिल का अपना सारा क्षेत्र पाकिस्तान के घुसपैठियों से खाली नहीं करवा लिया।

इतिहास में पहली बार 2 जुलाई, 1999 को तत्कालीन प्रधानमंत्री, अटल

बिहारी वाजपेयी स्वयं सैनिकों की पीठ थपथपाने के लिए युद्ध के मोर्चे पर गये। देश में प्रधानमंत्री की इस पहल को लेकर उत्साह का संचार हुआ। इस संघर्ष में शहीद हुए वीर सैनिकों के पार्थिव शरीरों को पहली बार हवाई जहाज या हेलिकॉप्टर के माध्यम से उनके परिवारजनों तक पहुंचाया गया, राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। केन्द्र और प्रदेश सरकारों ने शहीद के परिवारों की सहायता के लिये हर सम्भव सहायता प्रदान करने का प्रयास किया। उस समय हिमाचल प्रदेश में हमारी सरकार थी। नरेंद्र मोदी हिमाचल के प्रभारी थे। हमने भी आपस में विचार-विमर्श करके सैनिकों तक खाद्य सामग्री (पका-पकाया भोजन) और दैनिक उपयोग के वस्त्र आदि लिये और हेलिकॉप्टर में भर कर चार जुलाई को श्रीनगर पहुंच गये। पांच जुलाई प्रात:काल हम श्रीनगर से कारगिल के लिये उड़े। जब हम कारगिल उतर रहे थे तब भी पाकिस्तान की तरफ से गोलाबारी हो रही थी। सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी ब्रिगेडियर हमें जानकारियां दे रहे थे। बंकरों में उपस्थित सैनिकों को सामान बांटा और बाकी सामान उन सैनिकों के पास दे दिया ताकि मोर्चे पर लड़ाई लड़ रहे सैनिकों तक भी पहुंचाया जा सके। सायंकाल श्रीनगर वापस पहुंचकर हम सैनिक अस्पताल गये, घायल सैनिकों का कुशलक्षेम पूछा और उन्हें सामान बांटा। एक जवान बिस्तर पर लेटा हुआ था उसने सामान पकड़ा नहीं, हमने सामान साइड टेबल पर रख दिया यह सोचकर कि शायद घायल होने के कारण यह नाराज होगा। ज्यूं ही हम मुड़े तो एक डाक्टर दौड़े-दौड़े आया और हमें बताया कि माइन ब्लास्ट में उस जवान के दोनों हाथ और दोनों पैर उड़ गये थे। हम वापस मुड़े और उसके सिर पर हाथ रखकर पूछा, बहुत दर्द होता होगा, उसने कहा पहले था, कल शाम से नहीं हो रहा है।

हमने पूछा क्या कोई दर्द निवारक दवाई ली या टीका लगा? उसने कहा नहीं, कल शाम (4 जुलाई को) टाइगर हिल वापस ले लिया मेरा दर्द खत्म हो गया, यह सुनकर हम सब भावुक हो गये, देश भक्ति के इस जज्बे को सलाम। कारगिल युद्ध में हिमाचल के 52 जवान शहीद हुए थे, मैं सभी के घर गया, हर शहीद परिवार की दिल को छू लेने वाली बातें सुनीं।

विश्वविद्यालयों से जिंदादिल विद्यार्थी ही निकलें

अविजीत पाठक

कुछ दिन पहले जब मैंने दिल्ली की साउथ एशियन यूनिवर्सिटी (एसएयू) के चार शिक्षकों के निलंबन की खबर पढ़ी, मुझे झटका तो लगा पर अनावश्यक हैरानी भी नहीं हुई। खैर, ये सब प्रोफेसर, जितना मैं जानता हूं, अपने-अपने विषय में महारत रखते हैं। लेकिन वे तथाकथित 'विशुद्ध मूल्य-निर्लेप' व्यावसायिक अध्यापक बनने की बजाय अंतरात्मायुक्त असली शिक्षक बनें, वह जो अपने विद्यार्थियों के साथ खड़ा हो और घुल-मिलकर रहे। कोई आश्चर्य नहीं कि छात्र अपनी मासिक छात्रवृत्ति घटाए जाने का विरोध कर रहे थे और कुछ 'वैधानिक समितियों' में अपने प्रतिनिधियों को शामिल करने की मांग भी थी। निलंबित अध्यापकों ने विश्वविद्यालय प्रशासन से छात्रों से वार्ता करने और इस आंदोलन को महज कानून-व्यवस्था समस्या ठहराकर पुलिस के हाथों निपटाने की बजाय मसले का हल सहज तरीके से निकालने का आह्वान किया था।

एक शिक्षक अस्पताल में भर्ती उस छात्र का हाल जानने पहुंचे, जो आंदोलन के दौरान गंभीर रूप से बीमार पड़ा। एक अच्छे समाज में, इन गुणों और नीयत के लिए उक्त शिक्षकों की बल्कि प्रशंसा होती। पर, हम अलग वक्त में जी रहे हैं जिसने हर चीज को उलटकर रख दिया है, नैतिकता को अनैतिकता में, संवेदनशीलता को व्यावसायिकता में और छात्रवृत्ति को बेरपरवाही में। इसलिए, जैसा कि मैं सोचता हूं, उनका निलंबन होना ही था क्योंकि विश्वविद्यालय प्रशासन से उनकी ऐसी 'उद्दंडता' आखिर कैसे सहन होती! खैर, यह समझना मुश्किल नहीं है कि इस किस्म के अनुशासनात्मक उपायों से विश्वविद्यालय प्रशासन शिक्षक समुदाय को दो संदेश देना चाहता है- (अ) बतौर अध्यापक, आपको अपनी सीमाओं का भान होना चाहिए, अपनी मोटी तनख्वाह लो, चुप रहो और कक्षा में 'राजनीति मत लाओ', वर्ना दंडात्मक कार्रवाई के लिए तैयार रहो। (ब) हमारे निगरानी तंत्र को हल्के में मत लो, वह निरंतर आप लोगों पर नजर रखता है, आपका हर काम और हरकत उसे पता रहती है और जिन 'मार्क्सवादी अध्ययन परिधि' जैसे 'कट्टर मंचों' से आप जुड़े हैं, उसका भी ब्योरा हमारे पास है। वास्तव में, इन जुड़वां संदेशों से डर बैठाने का मनोवैज्ञानिक दबाव आगे जोर पकड़ेगा और अधिकांश शिक्षक 'बचकर रहो' वाला रवैया अपनाएंगे या कूटनीति से काम लेंगे या फिर अपनी खामोशी से प्रशासन को और ज्यादा निरंकुश बनने को उकसाएंगे। जब मैंने 1990 के दशक में अध्यापन का पेशा चुना था, तो मैं विश्वविद्यालय रूपी संस्था के उच्च आदर्शों से प्रेरित था। एक विश्वविद्यालय, जैसा कि मैं सोचता हूं, विद्यार्थियों और अध्यापकों का एक जीवंत और जिंदादिल समुदाय होना चाहिए, जहां दोनों साथ-साथ चलें; 'अध्यापन-शास्त्र' के मुताबिक सीखें और भूल सुधार करें; जहां अर्थपूर्ण अनुसंधान होता हो, जहां पर संस्कृति, राजनीति पर निरंतर बहस और संवाद चलता रहे, और एक न्यायपूर्ण एवं मानवीय दुनिया बनाने के लिए नाना प्रकार के विरोध करने के तौर-तरीकों पर विचार हो। शिक्षक मुक्त विचारों और आजादी भरे माहौल में फल-फूल सकें। मैं जानता हूं मेरे इस आदर्श का मजाक उड़ाया जाएगा और इन दिनों विश्वविद्यालयों के कर्ता-धर्ता बने बैठे 'तकनीकी-प्रशासक' इसको बकवास ठहराएंगे। कारण यह कि नव-उदारवाद का औजारी तर्क विश्वविद्यालयों को राजनीतिहीन बनाना चाहता है, बल्कि वे इन्हें एक ऐसे ब्रांड में तब्दील करना चाहते हैं, जो बाजार चालित 'उत्पादकता एवं दक्षता' वाले मंत्र से चले, छात्र एक 'उपभोक्ता' तो अध्यापक महज 'सेवा-प्रदाता' हो। इन परिस्थितियों में, अध्यापन-शास्त्र की उस भावना, जिसकी परिकल्पना पाओलो फ्रेरे और बेल हुक्स ने की थी, को बनाए रखना उत्तरोत्तर मुश्किल होता जाएगा। इसकी बजाय, उनके लिए एक अध्यापक या प्रोफेसर को 'मूल्य-निर्लेप' होना चाहिए। राजनीति उनके लिए भटकाव है, वे केवल शोधपत्र प्रकाशित करें, अपने दिमाग में बस 'प्रशस्ति पत्र सूची' और इसके 'प्रभाव अवयव' का गणित पाले रखें और विश्वविद्यालय की 'रैंकिंग' बढ़ाएं! वहीं विद्यार्थियों को केवल अपने 'उपयोगिता उद्देश्यों' के बारे में सोचना चाहिए। शायद, एसएयू भी इसी तर्क पर चल रहा है। कोई हैरानी नहीं कि जिन छात्रों ने आवाज उठाई थी उन्हें 'शरारती तत्व' की तरह लिया जा रहा है और चार शिक्षकों का निलंबन संकेत है कि यदि आप 'गड़बड़ी फैलाने' वाले विद्यार्थियों के साथ नजर आए, तो मुश्किल में पड़ना तय है। एक प्रकार से, शिक्षकों का निलंबन अलहदा करके नहीं देखा जा सकता। इससे आगे, जैसा कि भारत एक प्रकार से निर्वाचित-अधिनायकवाद की ओर अग्रसर है, हमें 'बुद्धिजीवी-घृणा' वायरस से पैदा हुआ नए किस्म का संकट देखने को मिल रहा है। आप न तो आलोचनात्मक हो सकते हैं। न ही प्रशासनिक व्यवस्था से सवाल पूछ सकते हैं। विकास, राष्ट्रवाद और धर्म को लेकर जो घुट्टी बलात पिलाई जाए, स्वीकार करें। आश्चर्य नहीं कि असहमति का हल्का-सा संकेत मिलने पर उसे आपराधिक माना जा रहा है! भारत में सब जगह विश्वविद्यालय प्रशासन जरूरत से ज्यादा सतर्क हो रहे हैं, किसी किस्म की वह गतिविधि, चाहे यह 'अध्यापन-शास्त्र सम्मत' क्यों न हो, कोई सांस्कृतिक या राजनीतिक गतिविधि, जो सत्तारूढ़ निजाम से सवाल करे या आलोचनात्मक विचारों को प्रोत्साहित करने वाली हो या फिर एकदम नयी जीवन-शैली हो, की इजाजत नहीं है। मुझे लगता था कि एसएयू जो कि दक्षेस राष्ट्रों की संयुक्त पहल है गुणात्मक रूप से अलग किस्म की होगी।

महिलाओं में आर्थराइटिस का है अधिक खतरा

इन आसनों से मिलेगा लाभ

बिगड़ी जीवनशैली के कारण पिछले दो दशकों से आर्थराइटिस यानी गठिया की समस्या बढ़ती जा रही है। जोड़ों में सूजन और दर्द की यह समस्या जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है। आंकड़ों के मुताबिक, दुनियाभर में करोड़ों लोग आर्थराइटिस की समस्या के शिकार हैं। भारत में आर्थराइटिस के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी देखी गई है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक, शारीरिक निष्क्रियता और आहार में गड़बड़ी के कारण गठिया को जोखिम बढ़ जाता है। महिलाओं में आर्थराइटिस की समस्या तेजी से बढ़ रही है। घर के कामकाज के दौरान खड़े होने, बैठने व झुकने में उन्हें दिक्कत होती है। ऑफिस में डेस्क वर्क करने वाली महिलाओं को भी जोड़ों का दर्द हो सकता है। ऐसे में शरीर को लचीला बनाए रखने और आर्थराइटिस की समस्या से बचाव के लिए नियमित कुछ फायदेमंद योगासनों का अभ्यास करना चाहिए।

कोबरा पोज

भुजंगासन एक ऐसा योगासन है, जो दो शब्दों को मिलाकर बना है। एक भुजंग अर्थात सांप और दूसरा आसन। अंग्रेजी में भुजंगासन को कोबरा पोज कहा जाता है, क्योंकि इसे करते समय शरीर की आकृति कुछ सांप जैसी हो जाती है। रीढ़ और कमर की हड्डी को मजबूती देने और उन्हें लचीला बनाए रखने के लिए कोबरा पोज योग का अभ्यास फायदेमंद हो सकता है। कोबरा पोज शरीर को पूर्ण आराम देने के साथ, ऊतकों और कोशिकाओं को ठीक रखने, मस्तिष्क को तनाव मुक्त रखने और शरीर में संतुलन बनाए रखने में कोबरा पोज योग को बहुत फायदेमंद माना जाता है।

वीरभद्रासन योग

शरीर के अंगों की बेहतर स्ट्रेचिंग करने के लिए वीरभद्रासन काफी फायदेमंद योगासन है। योग विशेषज्ञों के मुताबिक, क्रोनिक ऑस्टियोआर्थराइटिस के लक्षणों को कम करके यह योगासन बाह, पीठ के निचले हिस्से और पैरों को मजबूत बनाता है। वीरभद्रासन योगाभ्यास उन लोगों के लिए बेहद फायदेमंद है जो डेस्क पर लंबे समय तक काम करते हैं। वीरभद्रासन-2 पेट के अंगों को एक्टिव करता है जिससे पाचन क्रिया सुधरती है। यह आसन कार्पल टनल सिंड्रोम की समस्या से भी छुटकारा दिलाता है। वीरभद्रासन-2 शरीर को मजबूत बनाता है। वीरभद्रासन-2 करने पर बनने वाली मुद्रा से पैरों, गले और छाती में जो खिंचाव पैदा होता है उससे इन अंगों में होने वाले दर्द से छुटकारा मिलता है।

सेतुबंधासन योग

सेतु बंध आसन करने के लिए सबसे पहले चटाई बिछाकर पीठ के बल लेट जाएं। अब अपने पैरों को घुटनों से मोड़ें ताकि घुटने रीढ़ की हड्डी के 90 डिग्री पर हो। गठिया की समस्या से बचाव में सेतुबंधासन या ब्रिज पोज योग का अभ्यास बेहतर माना जाता है। इस योग को करने से रक्त परिसंचरण में सुधार होता है और गर्दन, रीढ़, छाती और कूल्हों की बेहतर स्ट्रेचिंग हो पाती है। आर्थराइटिस के लक्षणों को कम करने के लिए सेतुबंधासन योग का नियमित अभ्यास करें।

वृक्षासन योग

मांसपेशियों को मजबूत बनाने और रक्त संचार को बेहतर करने के लिए वृक्षासन योग का अभ्यास लाभकारी है। इसका नियमित अभ्यास गठिया की समस्या से लंबे समय तक सुरक्षित रखने में सहायक होता है। जिन लोगों को गठिया की समस्या है, उनके लिए वृक्षासन योग करना बहुत कठिन हो सकता है। लेकिन रक्त परिसंचरण, शरीर के संतुलन में सुधार और एकाग्रता के लिए वृक्षासन का अभ्यास करना चाहिए।

हंसना मना है

वाइफ- तुम मुझे सोते हुए गाली दे रहे थे? हसबेंड- नहीं तुम्हें कोई गलतफहमी हुई है, वाइफ- कैसी गलतफहमी? हसबेंड- यही कि मैं सो रहा था।

रमेश - जरा देख तो बाहर सूरज निकला या नहीं? सुरेश - बाहर तो अंधेरा है। रमेश - अरे टॉर्च जलाकर देख ले कामचोर।

टीचर - बताओ मंकी को हिंदी में क्या बोलते हैं? स्टूडेंट - बंदर, टीचर - किताब से देख कर बोला है न? स्टूडेंट - नहीं, मैंने तो आपको देख कर बोला।

टीचर (स्टूडेंट से) - आज तुमने लेट आने का क्या बहाना ढूंढा? स्टूडेंट - मैडम आज मैं इतना तेज दौड़कर आया कि बहाना सोचने का मौका ही नहीं मिला।

बारिश को देखकर पत्नी बोली- देखो मौसम कितना हसीन है, तुम्हारा क्या प्लान है? पति- मेरा तो वही है 178 में 1 GB/day का 28 दिन के लिए। पत्नी बोली- घुस जा मोबाइल में।

पत्नी-मैं बचूंगी नहीं मर जाऊंगी। पति- मैं भी मर जाऊंगा। पत्नी-मैं तो बीमार हूं लेकिन तुम किस लिए? पति-मैं इतनी खुशी बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा।

कहानी | अंधा घोड़ा

एक बार की बात है एक शहर के नज़दीक बने एक फार्म हाउस में दो घोड़े रहते थे। दूर से देखने पर वो दोनों बिलकुल एक जैसे दीखते थे, पर पास जाने पर पता चलता था कि उनमें से एक घोड़ा अंधा है। पर अंधे होने के बावजूद फार्म हाउस के मालिक ने उसे वहां से निकाला नहीं था बल्कि उसे और भी अधिक सुरक्षा और आराम के साथ रखा था। अगर कोई थोड़ा और ध्यान देता तो उसे ये भी पता चलता कि मालिक ने दूसरे घोड़े के गले में एक घंटी बांध रखी थी, जिसकी आवाज सुनकर अंधा घोड़ा उसके पास पहुंच जाता और उसके पीछे-पीछे बाड़े में घूमता। घंटी वाला घोड़ा भी अपने अंधे मित्र की परेशानी समझता था, वह बीच-बीच में पीछे मुड़कर देखता और इस बात को सुनिश्चित करता कि कहीं वो रास्ते से भटक ना जाए। वह ये भी सुनिश्चित करता कि उसका मित्र सुरक्षित है या नहीं। वापस आने पर अंधा घोड़ा जब तक अपने स्थान पर पहुंच न जाए तब तक वह उसकी ओर देखता रहता था और जब वह अपनी जगह की ओर बढ़ जाता।

कहानी से सीख- दोस्तों, बाड़े के मालिक की तरह ही भगवान हमें बस इसलिए नहीं छोड़ देते कि हमारे अन्दर कोई दोष या कमियां हैं। वो हमारा ख्याल रखते हैं और हमें जब भी ज़रुरत होती है तो किसी ना किसी को हमारी मदद के लिए भेज देते हैं। कभी-कभी हम वो अंधे घोड़े होते हैं, जो भगवान द्वारा बांधी गयी घंटी की मदद से अपनी परेशानियों से पार पाते हैं तो कभी हम अपने गले में बंधी घंटी द्वारा दूसरों को रास्ता दिखाने के काम आते हैं।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आज किसी नए व्यक्ति के प्रति आकर्षण महसूस हो सकता है। रोजगार मिलेगा। कपड़ों का व्यवसाय करते हैं तो आज आपको लाभ मिलने का योग है।

तुला

आज का दिन चुस्ती फुर्ती भरा रहेगा। आज आप अपनी धन संबंधी समस्याओं का हल निकालने में कामयाब रहेंगे और आपकी आर्थिक स्थिति को भी मजबूती मिलेगी।

वृषभ

आज का दिन आपके लिए सामान्य रहेगा। यदि आपने साझेदारी में कोई व्यापार किया हुआ है, तो उसमें आज आपको नुकसान हो सकता है।

वृश्चिक

आज आपका दिन बहुत ही बढ़िया रहेगा ।आज आप सबसे पहले खुद के कामों का निपटारा करेंगे ।आप के सभी रुके हुए काम पूरे हो जायेंगे।

मिथुन

आज आपका दिन ज्यादा फायदा दिलाने वाला रहेगा। आज बड़ो से प्रेरणा लेकर काम की पहल करने की जरुरत है । जीवन में दूसरे लोगों का सहयोग मिलता रहेगा ।

धनु

आज किसी दोस्त से दिल की बात कहन के लिए बहुत अच्छा दिन है। किसी कठिन मामले को सुलझाने के लिए अच्छा दिन है। अपनी समझदारी का इस्तेमाल करें।

कर्क

आज अपने परिजन व पड़ोसियों से बहस करने से बचें क्योंकि कोई छोटी सी बहस भी बड़े झगड़े में परिवर्तित हो सकती है। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी।

मकर

आज का दिन आपके लिए सामान्य रहने वाला है।आप नौकरी में माहौल आपके मन मुताबिक रहेगा, जिसका लाभ भी उठाएंगे। जीवन साथी ईगो में आकर कुछ गलत कह सकता है।

सिंह

आज आप अपने मन की बात किसी को बताएंगे, तो वह आपके बनते हुए कामों को बिगाड़ने की पूरी कोशिश करेगा। नौकरी में आज आपको पदोन्नति मिल सकती है।

कुम्भ

आज आपका दिन बेहतरीन रहने वाला है। आज आपका मन सामाजिक कार्यों में अत्यधिक लगेगा ।आज का दिन अपनी मेहनत और लगन से आगे बढ़ने का है।

कन्या

जीवनसाथी के साथ आरामदायक दिन बीतेगा। आपका प्रयास सकारात्मक परिणाम ज़रूर देगा। कोई आध्यात्मिक गुरू या बड़ा आपकी सहायता कर सकता है।

मीन

आज का दिन भावनात्मक रहेगा। रुके कार्य, विवाद, समस्या का निराकरण होगा। आपकी किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है।

अब डिजिटल की दुनिया में जादू चलायेंगी वाणी कपूर

> मैं हमेशा एक ऐसी अभिनेत्री रही हूं, जिसने अपनी कला के मामले में कभी भी कोई शॉर्टकट नहीं अपनाया।
> -वाणी कपूर

बॉलीवुड | मसाला

वाणी कपूर अपनी अदाकारी का जादू देशभर के लोगों पर चला चुकी हैं। वाणी ने अपने अब तक के करियर में साबित किया है कि वह बेबाकी से किसी भी तरह से किरदार को पर्दे पर उतार सकती हैं। ऐसे में एक्ट्रेस की फिल्मों के लिए अब उनके चाहने वाले हमेशा ही बेताब रहते हैं, अब खबर आई है कि वाणी डिजिटल की दुनिया में भी जादू चलाने वाली हैं।

वॉर, बेफिक्रे, शुद्ध देसी रोमांस और चंडीगढ़ करे आशिकी जैसी फिल्में देने के बाद वाणी कपूर जल्द ही मंडला मर्डर्स टाइटल से बन रही वेब सीरीज के साथ ओटीटी पर अपनी नई पारी शुरू करने के लिए बिल्कुल तैयार हैं। वाणी जल्द ही हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में एक दशक पूरा करने वाली हैं। इसी के साथ वह अब गोपी पुथरन द्वारा निर्देशित मंडला मर्डर्स सीरीज का हिस्सा बनेगीं। यह एक मनोरंजक क्राइम-थ्रिलर सीरीज होगी।

वाणी ने ओटीटी डेब्यू करने को लेकर कहा, मैं ओटीटी पर डेब्यू करने के लिए वाकई कुछ अलग तलाश रही थी। मैं मंडला मर्डर्स में गोपी पुथरन के साथ काम करने के लिए रोमांचित हूं, जो एक गंभीर अपराध थ्रिलर सीरीज है, जिसने मुझे सबसे कठिन काम करने के लिए प्रेरित किया है जो मैंने पहले कभी नहीं किया था।

वाणी ने आगे कहा, मैं हमेशा एक ऐसी अभिनेत्री रही हूं, जिसने अपनी कला के मामले में कभी भी कोई शॉर्टकट नहीं अपनाया, क्योंकि मैं फिल्म निर्माण की कला और अभिनय का सम्मान करती हूं। मंडला मर्डर्स ने मुझे इस सीरीज में जैसे पेश किया है, वह दर्शकों को पसंद आएगा। मैं इस समय मंडला मर्डर्स की शूटिंग में पूरी तरह से व्यस्त हूं और इसके आने का इंतजार कर रही हूं।

हालांकि, कहा जा रहा है कि यह सीरीज वाणी के लिए काफी चुनौतिपूर्ण रहा है, लेकिन वह उन चुनौतियों से ऊपर उठने का बीड़ा उठा रही हैं। सीरीज की शूटिंग अभी भी चल रही है। बता दें कि मंडला मर्डर्स यशराज फिल्म्स द्वारा निर्मित है और जल्द ही ओटीटी प्लेटफॉर्म पर स्ट्रीम की जाएगी।

हप्पू को मिली नई राजेश, गीतांजलि मिश्रा ने ली कामना पाठक की जगह

सुपरहिट कॉमेडी शो हप्पू की उलटन पलटन काफी समय से दर्शकों का मनोरंजन कर रहा है। इस शो का हर कलाकार अपने आप में खास है। अब शो में हप्पू सिंह की पत्नी श्रीमती राजेश सिंह के किरदार में एक नए कलाकार की एंट्री होने जा रही है। खबर है कि जल्द ही राजेश की भूमिका में एक्ट्रेस गीतांजलि मिश्रा नजर आएंगी, जिन्हें इससे पहले हम क्राइम पेट्रोल, कुंडली भाग्य, बालिका वधू और नागिन जैसे शोज में भी देख चुके हैं। इन खबरों की पुष्टि अब खुद एक्ट्रेस ने की है। उन्होंने कहा है कि एक दर्शक के रूप में उन्हें हमेशा इसके करेक्टर्स और एंटरटेनिंग स्टोरी के लिए यह शो देखना पसंद है। हालांकि, उन्होंने सपने में भी कभी ऐसा किरदार निभाने की कल्पना नहीं की थी, जिसे पर्दे पर देखकर उन्हें आनंद आया हो। गीतांजलि ने आगे कहा कि उनके लिए इससे भी ज्यादा अविश्वसनीय बात योगेश त्रिपाठी (दरोगा हप्पू सिंह), हिमानी शिवपुरी जी (कटोरी अम्मा) और बाकी पल्टन जैसे अनुभवी कलाकारों के साथ स्क्रीन साझा करने का अवसर है। एक्ट्रेस अपने इस रोल को लेकर काफी उत्साहित हैं, साथ ही उन्हें पहली बार इस तरह की किसी भूमिका में देखना भी दिलचस्प होगा।

बॉलीवुड | हॉट लुक

रकुल प्रीत सिंह पर फिर चढ़ा बोल्डनेस का खुमार

रकुल प्रीत सिंह का हर अंदाज देखकर इन दिनों ऐसा लग रहा है कि वह वक्त के साथ और ज्यादा बोल्ड होती जा रही है। रकुल की फिल्मों के लिए हमेशा ही फैंस उत्साहित रहते हैं। उन्होंने अपने किरदारों से दर्शकों का खूब दिल जीता है। वहीं, इन दिनों एक्ट्रेस के लुक्स के को लेकर भी फैंस की काफी उत्सुकता बढ़ गई है। अब फिर से रकुल ने इंस्टाग्राम पर अपनी एक फोटो शेयर की है। इसमें उन्होंने प्रिंटेड मल्टी कर्ल्ड मोनोकिनी पहनकर स्वीमिंग पूल के किनारे पर बैठे हुए देखा जा रहा है।

यहां एक्ट्रेस ने कैमरे की ओर अपना बैकसाइड दिखाया है और चेहरा पीछे की ओर करके मुस्कान के साथ पोज दे रही हैं। रकुल ने यहां मिनिमल मेकअप रखा है। उन्होंने सटल बेस के साथ न्यूड ग्लॉसी लिप्स रखे हैं और बालों को ओपन छोड़ा है। इसके साथ एक्ट्रेस ने सनग्लासेस लगाए हुए हैं। रकुल इस लुक में भी हॉट और खुश दिख रही हैं। चाहने वाले तो उनकी इन अदाओं की तारीफों के पुल बांधते हुए खूब कमेंट्स कर रहे हैं। रकुल प्रीत सिंह की अकमिंग फिल्मों पर बात करें तो इस वक्त एक्ट्रेस को लगातार कई प्रोजेक्ट्स के लिए साइन किया जा रहा है। जल्द ही उन्हें अलायान टाइटल से बन रही दक्षिण भारतीय फिल्म में देखा जाने वाला है। इसके बाद वह इंडियन 2 और भूमि पेडनेकर के साथ मेरी पत्नी के रीमेक में भी नजर आने वाली हैं।

यहां है एशिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी 9 लाख से ज्यादा किताबें हैं मौजूद

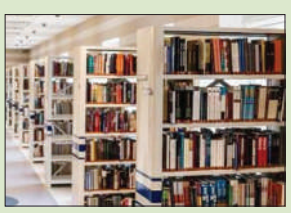

प्रतापाराम/ जैसलमेर। अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था 'केवल एक चीज आपको पता होनी चाहिए और वो है लाइब्रेरी का एड्रेस। पोकरण थार का नाम आता है, तो स्वतः ही दिमाग में रेगिस्तान व रेत के टीलों का दृश्य बनने लगता है, लेकिन किसी ने सोचा होगा कि इन रेतीले धोरों के बीच एक ऐसी भी जगह है, जहां ज्ञान का अथाह भंडार भरा पड़ा है। मरुप्रदेश के तपते रेतीले धोरों के बीच भारत-पाक सीमा पर स्थित सरहदी जिला जैसलमेर वैसे तो विश्व मानचित्र पर अपनी अलग पहचान रखता है। इसी जिले में जैसलमेर-पोकरण के बीच प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल भादरियाराय माता मंदिर स्थित है। यहां जगदम्बा सेवा समिति ने एक विशाल पुस्तकालय की नींव रखी है। यह एशिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है। यहां पुस्तकों की देखरेख संरक्षण के लिए करीब 562 अलमारियां बनाई गई हैं, जिसमें लाखों पुस्तकें रखी गई हैं। यहां 16 हजार फीट की रैक बनाई गई है, उसमें भी पुस्तकों को रखा जाएगा। उन्हें रखने के लिए यहां पर अठारह कमरों का भी निर्माण करवाया गया है। यहां बनी चार गैलेरियों में से दो करीब 275 फीट दो करीब 370 फीट लम्बी हैं। पुस्तकालय में अध्ययन के लिए अलग से एक 60 गुणा 365 फीट के विशाल हॉल का निर्माण करवाया गया है। यहां चार हजार लोग एक साथ बैठ सकते हैं।

इस पुस्तकालय में विश्व के कुल 11 धर्मों में से सात धर्मों का संपूर्ण साहित्य उपलब्ध है। कानून की आज तक प्रकाशित सभी पुस्तकें, आयुर्वेद, वेदों की संपूर्ण श्रृंखलाएं, भारत का संविधान, विश्व का संविधान, जर्मन लेखक एफ मैक्स मुलर की रचनाएं, पुराण, एनसाइक्लोपिडिया की पुस्तकें, आयुर्वेद, इतिहास, स्मृतियां, उपनिषद, देश के सभी प्रधानमंत्रियों के भाषण विभिन्न शोध की पुस्तकों सहित हजारों तरह की पुस्तकें यहां उपलब्ध हैं। इसके साथ ही इस पुस्तकालय में हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषाओं के साथ साथ उर्दू, पारसी, परशियन, अरबी तथा तमिल पांडूलिपि में भी कई पुस्तकों का संग्रहण है। यहां की किताबों के बारें में ऐसा कहा जाता है कि उसे या तो भदरिया महाराज द्वारा लाया गया था या फिर उन्हें तोहफा में मिला था। भदरिया लाइब्रेरी की देखभाल का जिम्मा जगदंबा सेवा समिति द्वारा किया जाता है, जिसे भदरिया महाराज ने ही बनाया था।

अजब-गजब | इस हवेली के निर्माण में उपयोग हुआ है चूने का उपयोग

100 साल पहले सिर्फ मनोरंजन के लिए किया था इस शानदार हेवली का निर्माण

नरेश पारीक/ चूरू। थार के प्रवेश द्वार के नाम से मशहूर चूरू अपनी कला और अपनी गगनचुंबी हवेलियों के लिए काफी मशहूर है। पहली नजर में ही किसी को भी सम्मोहित करने वाली यहां की हवेलियां आज विदेशी पर्यटकों की पहली पसंद है। यहां सबसे दिलचस्प बात यह है कि चूरू का कोई शाही इतिहास नहीं है। ये हवेलियां अमीर और समृद्ध व्यापारियों के घर थे, जो यहां रहते थे। हवेलियों में पेंटिंग मालिक की जीवन शैली का प्रतिबिंब है, या उस समय के फैशन का चित्रण है जैसे कार या ट्रेन में यात्रा करना।

बेज स्थापत्य कला का नायाब उदाहरण प्रस्तुत करती इन हवेलियों पर उकेरे ये चित्र जैसे इन्हें आज ही चित्रित किया गया हो। हवेलियों के दरवाजे भी जटिल रूप से डिजाइन किए गए हैं और इन्हें निहारने में आप पूरा दिन बिता सकते हैं। ऐसी ही एक हवेली है मालजी का कमरा जिसका निर्माण सेठ मालचंद कोठारी ने अपने मनोरंजन के लिए सन 1925 में करवाया था। करीब 100 वर्ष पुरानी इस हवेली

के निर्माण में चूने का उपयोग हुआ है, इसकी छत ढोले की है। इसमें इटालियन कलाकारी, भित्ति चित्र और नक्काशी इसकी सुंदरता में चार चांद लगाती है और आज देशी-विदेशी पर्यटकों की पहली पसंद है। वर्तमान में इस हवेली में जिले का पहला हैरिटेज होटल संचालित हो रहा है जहां देशी और विदेशी पर्यटक लग्जरी सुविधाओं का लुत्फ उठा सकते हैं।

गाइड लालसिंह बताते है कि इस हवेली का निर्माण सेठ मालचंद कोठारी ने अपने मनोरंजन के लिए करवाया था। जहां वह अपने शाही यार, दोस्तो के साथ समय बिताते थे। मालजी के कमरे के नाम से मशहूर इस हवेली के बीच मे एक चौक और उसके चारों और दर्शक दीर्घा और ऊपर भी दर्शक दीर्घा के लिए कमरों के बाहर एक छोटी गैलेरी है। वर्तमान में यह हवेली सेल होने के बाद एक व्यवसायिक उपयोग में ली जा रही है वर्षो पुरानी इस हवेली का नाम आज बदलकर होटल मालजी कर दिया गया है। जिसमें 12 रूम विथ ऐसी एक हॉल और आगे एक गार्डन है।

भाजपा इंडिया को जितना गलत बोलेगी उसकी पसंद बढ़ेगी : ममता

» बोलीं - मुझे लगता है कि पीएम मोदी को पसंद आया इंडिया नाम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। विपक्षी दलों के नवगठित गठबंधन इंडिया पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की टिप्पणी को लेकर बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने उनपर तंज कसते हुए कहा कि उनके ख्याल से उन्हें (पीएम को) इंडिया नाम पसंद है। राजभवन में राज्यपाल सीवी आनंद बोस से शिष्टाचार मुलाकात के बाद पत्रकारों से बात करते हुए ममता ने कहा कि भाजपा विपक्षी गठबंधन के बारे में जितनी गलत बातें करेगी, उतना ही वह इसके (इंडिया गठबंधन) प्रति अपनी पसंद साबित करेगी।

प्रधानमंत्री मोदी ने मंगलवार को भाजपा के संसदीय दल की बैठक में विपक्षी गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) को देश का अब तक का सबसे दिशाहीन गठबंधन करार दिया। उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी से लेकर प्रतिबंधित आतंकी संगठन इंडियन मुजाहिदीन व पीएफआई जैसे नामों का हवाला देते हुए कहा कि केवल देश के नाम के इस्तेमाल से लोगों को गुमराह नहीं किया जा सकता है। ममता ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री को धन्यवाद। मुझे लगता है कि उन्हें इंडिया नाम पसंद है। आम लोगों की तरह उन्होंने भी इसे स्वीकार कर लिया है। जितना अधिक वे नाम के बारे में बुरा बोलेंगे, उतना ही अधिक वे इसके प्रति अपनी पसंद साबित करेंगे।

कानून मंत्री ने ईडी के समन को फिर टाला

बंगाल के कानून मंत्री मलय घटक ने एक बार फिर बंगाल में करोड़ों रुपये के कोयला तस्करी मामले में पूछताछ के लिए ईडी के समन को नजरअंदाज करने का फैसला किया है। घटक को इस सप्ताह नई दिल्ली स्थित केंद्रीय एजेंसी के मुख्यालय में उपस्थित होने के लिए कहा गया था। हालांकि, सूत्रों ने कहा कि मंत्री ने ईडी अधिकारियों को एक पत्र भेजकर नोटिस का सम्मान करने में असमर्थता व्यक्त की थी क्योंकि उनकी पूर्व व्यस्तताएं कहीं और थीं। ईडी ने उन्हें 12 जुलाई को एजेंसी के नई दिल्ली कार्यालय में उपस्थित होने का नोटिस जारी किया था। यह पहली बार नहीं है कि करोड़ों रुपये के कोयला तस्करी मामले के संबंध में पूछताछ के लिए ईडी अधिकारियों ने घटक को नई दिल्ली में केंद्रीय एजेंसी के मुख्यालय में उपस्थित होने के लिए कहा है। लेकिन हर बार राज्य के कानून मंत्री उस समन को टाल देते थे।

राजा भैया को कोर्ट ने दी मोहलत

» पत्नी को तलाक का मामला, लिखित दलीलें देने का समय मिला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली की साकेत कोर्ट में विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया की पत्नी को तलाक के मामले में लिखित दलीलें जमा करने के लिए समय दे दिया है। राजा भैया ने अपनी पत्नी भानवी सिंह से तलाक के लिए अदालत में याचिका दायर की है। साकेत कोर्ट में शुनाली गुप्ता की परिवार अदालत में यह मामला सुनवाई के लिए लगा था।

भानवी सिंह के वकील ने लिखित जवाब दायर करने के लिए समय मांगा। इसके बाद अदालत ने एक सप्ताह क समय मंजूर करते हुए मामले की अगली सुनवाई तीन अगस्त को सूचीबद्ध कर दी। राजा भैया ने अपनी पत्नी से तलाक के लिए 2022 में याचिका दायर की थी। उन्होंने क्रूरता और परित्याग के आधार पर तलाक मांगा है। राजा भैया और भानवी सिंह की शादी 28 साल पहले हुई थी। राजा भैया ने आरोप लगाया कि उनकी पत्नी ने ससुराल का घर छोड़ दिया है और वापस आने से इन्कार कर दिया है। राजा भैया ने यह भी कहा कि उनकी पत्नी ने उनके परिवार के सदस्य के खिलाफ फर्जी आरोप लगाए हैं जो क्रूरता के समान है। राजा भैया की याचिका पर अदालत ने भानवी सिंह को नोटिस जारी किया था।

22 से ज्यादा राज्यों में भारी बारिश की संभावना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने अगले तीन दिन 22 से ज्यादा राज्यों में भारी बारिश की संभावना जताई है। इनमें हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड समेत पूरे उत्तर पश्चिम भारत से लेकर पूर्वोत्तर और दक्षिण भारत के राज्य शामिल हैं।

इस दौरान बुधवार को मध्य महाराष्ट्र, पूर्वी गुजरात, कोंकण, गोवा, तेलंगाना, रॉयलसीमा और आंध्र प्रदेश के तटवर्ती इलाकों में भारी बारिश और आंधी-तूफान को लेकर रेड अलर्ट जारी किया गया है। कुल्लू में बादल फटने से संपत्ति का भारी नुकसान हुआ है। गंगा, यमुना, घग्गर, हिंडन समेत सभी प्रमुख नदियां खतरे के निशान के ऊपर बह रही हैं और कई इलाके बाढ़ के पानी में डूबे हुए हैं। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और चंडीगढ़ में अलग-अलग स्थानों पर भारी से बहुत भारी बारिश होने की संभावना है।

अडाणी की कंपनियों के शेयरों में उछाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नयी दिल्ली। अरबपति उद्योगपति गौतम अडाणी के समूह की कंपनियों का बाजार पूंजीकरण को एक ही दिन में 50,501 करोड़ रुपये से अधिक बढ़ गया। बंदरगाह से लेकर बिजली क्षेत्र में कार्यरत समूह की सभी 10 सूचीबद्ध कंपनियों के शेयरों के प्रति निवेशकों ने दिलचस्पी दिखाई। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, बीएसई पर मंगलवार को कारोबार के अंत में अडाणी समूह की 10 कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) 10.6 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया।

बाजार विशेषज्ञ समूह के शेयरों की कीमत में बढ़ोतरी की वजह घरेलू निवेशकों की बढ़ी हुई दिलचस्पी को मान रहे हैं। एक घरेलू ब्रोकरेज हाउस के शोध प्रमुख ने कहा, ''निश्चित रूप से खुदरा निवेशक, एचएनआई और पारिवारिक कार्यालयों जैसे निवेशकों की अडाणी के शेयरों में रुचि है। हिंडनबर्ग मुद्दा अब पीछे चला गया है और बाजार अडाणी समूह का आकलन उसके वित्तीय प्रदर्शन के आधार पर कर रहा है। समूह की कंपनी अडाणी ग्रीन एनर्जी लि. (एजीईएल) के शेयर में मंगलवार को 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं अडाणी पावर का शेयर 9.3 प्रतिशत चढ़ गया।

50,501 करोड़ रुपये बढ़ा बाजार पूंजीकरण

अडाणी एंटरप्राइजेज में दो प्रतिशत की बढ़त

समूह की प्रमुख कंपनी अडाणी एंटरप्राइजेज में दो प्रतिशत की बढ़त देखी गई, जिससे इसका बाजार पूंजीकरण 2.81 लाख करोड़ रुपये हो गया। अडाणी ट्रांसमिशन का शेयर अपने पिछले बंद भाव से आठ प्रतिशत चढ़कर 834.80 रुपये पर पहुंच गया। इससे कंपनी का बाजार मूल्यांकन अब 93,121 करोड़ रुपये हो गया है। अडाणी विल्मर के शेयर में 4.57 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई और यह 416.65 रुपये पर पहुंच गया। कंपनी का बाजार पूंजीकरण बढ़कर 54,151 करोड़ रुपये हो गया है। अडाणी टोटल गैस लि. (एटीजीएल) में पांच प्रतिशत का उछाल आया। कंपनी का बाजार मूल्यांकन 72,856 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। इसी तरह अडाणी पोर्ट्स का शेयर 1.90 प्रतिशत की बढ़त के साथ 749.35 रुपये पर पहुंच गया है। कंपनी का बाजार पूंजीकरण अब 1,61,870 करोड़ रुपये पर है। अडाणी की सीमेंट क्षेत्र की कंपनी अंबुजा सीमेंट्स में भी 4.10 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही। कंपनी का बाजार पूंजीकरण बढ़कर 87,418 करोड़ रुपये हो गया है। वहीं, एसीसी का शेयर 4.83 प्रतिशत चढ़ा और कंपनी का मूल्यांकन 35,528 करोड़ रुपये हो गया है। समूह की मीडिया इकाई एनडीटीवी के शेयर ने मंगलवार को ऊपरी सर्किट छुआ। एनडीटीवी का शेयर 4.99 प्रतिशत चढ़कर 238.75 रुपये पर बंद हुआ।

ड्रॉ मैच से टीम इंडिया की रैंकिंग फिसली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। वेस्टइंडीज के खिलाफ बारिश के कारण दूसरा मैच ड्रॉ पर छूटने के बाद भारत विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) की नवीनतम तालिका में दूसरे स्थान पर खिसक गया है। भारत ने इस तरह से दो मैचों की श्रृंखला 1-0 से जीती लेकिन बारिश ने उसकी क्लीन स्वीप करके डब्ल्यूटीसी के तीसरे चक्र के लिए कुछ महत्वपूर्ण अंक जुटाने की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

भारत डब्ल्यूटीसी रैंकिंग में दूसरे स्थान पर

डब्ल्यूटीसी के पहले दो चक्र में फाइनल में पहुंचने वाली भारतीय टीम ने डोमिनिका में खेला गया पहला टेस्ट मैच पारी और 141 रन से जीत कर नए चक्रकी शानदार शुरुआत की थी। दूसरे टेस्ट में मैच के चौथे दिन वेस्टइंडीज ने 365 रन के मुश्किल लक्ष्य का पीछा करते हुए दो विकेट पर 76 रन बनाए थे।

शीर्ष पर पहुंचा पाकिस्तान

भारत को मैच के आखिरी दिन आठ विकेट की जरूरत थी लेकिन बारिश के कारण पूरे दिन का खेल रद्द हो गया। इस ड्रा से भारत की जीत-हार का प्रतिशत प्रभावित हुआ, जो 100 से घटकर 66.67 रह गया है। पिछले सप्ताह गॉल में श्रीलंका पर चार विकेट की जीत के बाद पाकिस्तान 100 प्रतिशत जीत-हार के रिकॉर्ड के साथ शीर्ष पर काबिज है। एशेज श्रृंखला खेल रहे मौजूदा डब्ल्यूटीसी चैंपियन ऑस्ट्रेलिया (54.17) और इंग्लैंड (29.17) क्रमशः तीसरे और चौथे स्थान पर हैं। भारत के खिलाफ ड्रॉ से वेस्टइंडीज को फायदा हुआ है और उसकी जीत-हार का प्रतिशत बढ़कर 16.67 हो गया है और वह पांचवें स्थान पर पहुंच गया है। श्रीलंका एक हार के साथ नौवें स्थान पर है। पिछले महीने शुरू हुए नए 2023-25 विश्व टेस्ट चैंपियनशिप चक्र में न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका और बांग्लादेश ने अभी कोई मैच नहीं खेला है।

देश के सम्मान व गरिमा के लिए एलओसी भी करेंगे पार : राजनाथ

» कारगिल दिवस पर शहीदों को दी श्रद्धांजलि

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जम्मू/लेह। लद्दाख के द्रास में करगिल विजय दिवस के मौके पर आयोजित मुख्य समारोह को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत अपने सम्मान और गरिमा को बनाए रखने के लिए नियंत्रण रेखा (एलओसी) को पार करने के लिए तैयार है, और नागरिकों से ऐसी स्थिति में सैनिकों का समर्थन करने के लिए तैयार रहने का आह्वान किया।

24वें करगिल विजय दिवस के मौके पर लद्दाख के द्रास में आयोजित मुख्य समारोह में केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थि हुए। उन्होंने देश के लिए अपनी जान न्योछावर करने वाले शहीद जवानों को श्रद्धांजलि दीं। साथ ही, सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे और वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने द्रास में करगिल युद्ध स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित की। रक्षा मंत्री ने कहा कि करगिल युद्ध भारत के ऊपर एक थोपा गया

युद्ध था। उस समय देश ने पाकिस्तान से बातचीत के माध्यम से मुद्दों को सुलझाने का प्रयास किया। खुद पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजेपयी ने पाकिस्तान की यात्रा करके कश्मीर सहित अन्य मुद्दों को सुलझाने का प्रयास किया था। लेकिन पाकिस्तान ने भारत पीठ में खंजर घोंप दिया।

राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री ने दी शहीदों को श्रद्धांजलि

राष्ट्रपति ने ट्वीट किया, आज करगिल विजय दिवस के गौरवशाली अवसर पर सभी देशवासी हमारे सशस्त्र बलों के असाधारण पराक्र म से अर्जित की गई विजय को याद करते हैं। देश की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान करके विजय का मार्ग प्रशस्त करने वाले सेनानियों को एक कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से मैं श्रद्धांजलि देती हूं। उनकी शौर्य गाथाएं आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करती रहेंगी। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शहीदों याद किया।

कारगिल विजय दिवस के अवसर पर कारगिल शहीद स्मृति वाटिका, आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

कैप्टन मनोज पांडे की अंतिम यात्रा देख पता चला कोई कैसे अमर हो जाता है: मनमोहन

शहीद कैप्टन पांडे के भाई मनमोहन पांडे कहते हैं, वह मरे नहीं... वह अमर हो गए। मैं लखनऊ में हमारे घर का वह दृश्य नहीं भूल सकता जब तिरंगे में लिपटा उनका पार्थिव शरीर पहुंचा। कम से कम 15 लाख लोग मनोज पांडे अमर रहे (अमर) के नारे लगाते हुए काफिले में शामिल हुए।

वीर सैनिकों के चलते हम खुली हवा में सांस ले रहे

राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत मां के ललाट की रक्षा के लिए, 1999 में करगिल की चोटी पर देश के सैनिकों ने वीरता का जो प्रदर्शन किया, जो शौर्य दिखाया, वह इतिहास में हमेशा स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। आज हम खुली हवा में सांस इसलिए ले पा रहे हैं, क्योंकि किसी समय भी शून्य से कम तापमान में भी हमारे सैनिकों ने ऑक्सीजन की कमी के बावजूद अपनी बंदूकें नीची नहीं कीं।

हम हर कीमत चुकाने को तैयार, देश सब देख रहा है : खरगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राज्यसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मणिपुर मुद्दे पर संसद में गतिरोध को लेकर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखा है। पत्र में कहा गया है कि हम प्रधानमंत्री से संसद में आने और बोलने का आग्रह कर रहे हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि इससे उनकी प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचेगी।

हम इस देश के लोगों के लिए प्रतिबद्ध हैं और हम इसके लिए हर कीमत चुकाएंगे...लंबे समय से सत्ता में रहने के बावजूद हम जानते हैं कि सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों पक्षों के आचरण के रिकॉर्ड इतिहास के पन्नों में दर्ज हैं। पत्र में आगे कहा गया है कि आपको ध्यान होगा कि मणिपुर में तीन मई के बाद की स्थिति पर इंडिया के घटक दलों की लगातार मांग रही है कि प्रधानमंत्री सदन के पटल पर पहले अपना बयाने दें, जिसके बाद दोनों सदनों में इस विषय पर विस्तृत बहस और चर्चा की जाए। जिस तरह की गंभीर स्थिति पिछले 84 दिनों से मणिपुर में व्याप्त है और जिस तरह की घटनाएं एक-एक कर सामने आ रही हैं, हम सभी राजनीतिक दलों से यह अपेक्षित है कि हम यहां पर तत्काल शांति बहाली के लिए एवं जनता को संदेश देने के लिए देश के सर्वोच्च सदन में कम से कम इतना तो करेंगे।

फोटो :4 पीएम

कॉन्फ्रेंस केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने बुधवार को लखनऊ के वीवीआईपी गेस्ट हाउस में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया। इस अवसर पर यूपी के डिप्टी सीएम और स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक भी मौजूद रहे।

सफाई ठेकेदारों के भुगतान पर कमीशन का खेल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सफाई ठेकेदारों के भुगतान में हो रही खुल्लम-खुल्ला-कमीशनखोरी में लिप्त रहने वाले जोनल अधिकारियों को एकबार फिर सफाई की जिम्मेदारी देकर नगर निगम ने यह जता दिया है निगम की आर्थिक हालत को पतली करने वाले अधिकारियों को वह फिर मोटा करने का यंत्र थमाने में कोई गुरेज नहीं है।

हालांकि इस फैसले से जोनल सेनेटरी अधिकारी एवंम खाद्य निरीक्षक नाराज हो गए हैं। उन्होंने सामूहिक बहिष्कार किया एवंम विरोध दर्ज कर आपत्ति जताई है। उन्होंने कहा कि सफाई का कार्य जोनल अधिकारियों को ना दिया जाये। गौरतलब हो कि इससे पूर्व भी जोनल अधिकारियों द्वारा पूर्व में सफाई का कार्य देखा जा रहा

» जोनल अधिकारियों को फिर मिली सफाइ की जिम्मेदारी

» सेनेटरी अधिकारी एवं खाद्य निरीक्षक करेंगे बहिष्कार

था। एक बार फिर इस जिम्मेदारी को जोनल अधिकारियों को देने के पीछे सारा मामला सफाई ठेकेदारों के भुगतान पर मिल रहे कमीशन एवम बंदरबाट का है । नगर आयुक्त ने उक्त आदेशों को दिया है।

कई बर्षों से जमे हैं सफाई निरीक्षक

कई वर्षों से जोनों में तैनात सफाई निरीक्षकों का स्थानांतरण भी नहीं हुआ है। पूर्व में तैनात अधिकारियों की मिली भगत से मनचाही जोनों में तैनाती ले रखी है। जोनल सेनेटरी अधिकारी एवंम खाद्य निरीक्षकों के पास लाइसेंस का भी कार्य था। इनके द्वारा नगर निगम को आर्थिक नुकसान पहुंचाने का कार्य किया गया है। जिन प्रतिष्ठानों के कई वर्षों से लाइसेंस रिनीवल फीस जमा होनी थी उनका नया लाइसेंस बनाकर रिनिवल फीस जेब में भरने का काम भी किया गया।

हमारी सरकार से चूक हुई, राज्य में जल्द होगी शांति : बीरेन सिंह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंफाल। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह ने कहा है कि राज्य में कई इलाकों में थोड़ी-बहुत फायरिंग की घटनाएं हो रही हैं, लेकिन हालात अब बहुत गंभीर नहीं हैं। उन्होंने संकेत दिया कि राज्य में बहुत जल्द शांति प्रक्रिया शुरू हो सकती है। सरकार अनौपचारिक तरीके से शांति प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की कोशिशों में जुटी हुई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि शांति प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए हम सभी समूहों को बैकचैनल संदेश भेज रहे हैं। इसके लिए सिविल सोसायटी, प्रोफेसर, धार्मिक गुरुओं के साथ-साथ कुकी जनजाति के लोगों की मदद ली जा रही है। हालांकि राज्य में शांति कब तक कायम होगी, इसे लेकर मुख्यमंत्री ने कोई डेडलाइन नहीं बताई।

अवैध माइग्रेशन और ड्रग्स ने बिगाड़े हालात

महिलाओं के साथ दरिंदगी के वीडियो पर यूरोपीय यूनियन की संसद से लेकर विपक्ष तक के हमले का केंद्र रहे मुख्यमंत्री ने कहा, अफसोस है कि घटना के बारे में हमें विडियो से पता चला। राज्य में हिंसा के दौरान हत्या, किडनैपिंग और आगजनी की करीब नौ हजार से ज्यादा एफआईआर दर्ज हुई थीं। इतनी सारी घटनाओं के बीच वायरल विडियो वाली घटना

पुलिस से नजरअंदाज हो गई। इस स्तर पर चूक हुई। सीएम ने कहा कि राज्य में मौजूदा हिंसा के पीछे साजिश है। उन्होंने इसके लिए अवैध माइग्रेशन और ड्रग्स कारोबारियों पर शक जताया। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि पिछले 10-15 साल में म्यांमार के रास्ते घुसपैठ बढ़ी है। हमारी सरकार ने अवैध घुसपैठ और अफीम की अवैध खेती के खिलाफ ऐक्शन लिया है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in
RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।